मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय

राजा भोज मार्ग (कोलार रोड), भोपाल–462 016 (म0प्र0)

प्रबंध बोर्ड की 59वीं बैठक
दिनाँक 22 सितम्बर, 2014 समय 12.00 बजे
:: कार्यवृत्त ::

विश्वविद्यालय की प्रबंध बोर्ड की 59वीं बैठक आज दिनाँक 22 सितम्बर, 2014 को 12.00 बजे माननीय कुलपतिजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सदस्यों की उपस्थिति निम्नानुसार रहीः–

1. **प्रो0(डॉ0) तारिक ज़फर,**
   कुलपति, मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — अध्यक्ष
2. **प्रो0 (डॉ0) एच0आर0 यादव,**
   डी–141/1, इन्दिरा नगर, लखनऊ–226 016 (उ0प्र0) — सदस्य
3. **श्री सौरभ बड़ेरिया,**
   चेयरमेन, ग्लोबल ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स,
   नेट्रो हॉस्पिटल, कुचैनी परिसर, क्षेत्रीय बस स्टेण्ड के पीछे,
   दमोह नाका, जबलपुर (म0प्र0) — सदस्य
4. **श्री आर.एन. मिश्रा,**
   संयुक्त संचालक, कोष एवं लेखा,
   मध्यप्रदेश शासन, भोपाल। — सदस्य
5. **डॉ. आर. के. विजय,**
   उपसचिव, उच्च शिक्षा विभाग,
   मध्यप्रदेश शासन, भोपाल। — सदस्य
6. **डॉ0 एन.सी. जैन,**
   निदेशक, प्रवेश एवं मूल्यांकन विभाग,
   मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — सदस्य
7. **डॉ0 सलमा खान,**
   निदेशक, शोध विभाग,
   मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — सदस्य
8. **डॉ0 नीरजा चतुर्वेदी,**
   रीडर, बहुमाध्यमी शिक्षा विभाग,
   मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — सदस्य
9. **डॉ0 ज्योति पाराशर,**
   व्याख्याता, एल0एल0एम0विभाग,
   मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — सदस्य
10. **डॉ. प्रवीण जैन, निदेशक, विद्यार्थी सहायता**
    मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — विशेष आमंत्रित
11. **डॉ. बी. भारती,**
    कुलसचिव,
    मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल। — सचिव.

प्रबंध बोर्ड की कार्यवाही आरम्भ करने के लिए कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने मान. अध्यक्ष/कुलपति महोदय से अनुमति ली तथा प्रबंध बोर्ड में प्रथम बार मनोनीत सदस्या डॉ. ज्योति पाराशर का स्वागत

कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)

(10) [illegible] पुस्तकालय (ई लाइब्रेरी)

निर्णय :- माननीय कुलपति जी ने अवगत कराया कि विश्वविद्यालय द्वारा कार्यवाही की जा रही है। सूचना प्राप्त की गई।

(11) छात्र संख्या का विवरण एवं

(12) मेधावी छात्रों हेतु विशेष छात्रवृत्ति योजना।

निर्णय :- बिन्दु क्रमांक 11 एवं 12 के संबंध में शासन के निर्णय की प्रशंसा की गई तथा इसे मान्य करते हुए यह भी निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय यथाशीघ्र आगामी कार्यवाही करें।

(13) उच्च शिक्षा कोष हेतु सहायता राशि संबंधी।

निर्णय :- शासन से स्पष्ट प्रस्ताव/प्रावधान/ आदेश प्राप्त होने पर आगामी बैठक में प्रस्तुत किया जावे।

(14) विश्वविद्यालय में पदस्थ कर्मचारियों का नियमितीकरण।

निर्णय :- विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड द्वारा तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के नियमितीकरण की कार्यवाही की गई है इसकी सूचना शासन को दी जावे।

(15) रिक्त बैकलॉग के पदों पर भर्ती

निर्णय :- प्रकरण प्रक्रियाधीन है।

(16) धनादेश पर संयुक्त हस्ताक्षर संबंधी।

निर्णय :- धनादेश पर कुलसचिव व वित्तअधिकारी के संयुक्त हस्ताक्षर से संबंधित शासन के आदेश क्रमांक/1256/1258/2014/38-3 दिनांक 10/07/2014 को अभी स्थगित माना जावे तथा प्रकरण में वित्त विभाग म. प्र. शासन से अभिमत प्राप्त किया जावे तब तक पूर्व परम्परानुसार वित्ताधिकारी ही धनादेश पर एकल हस्ताक्षर करें।

(17) कुलसचिव का अस्थायी प्रभार।

निर्णय :- म.प्र. शासन,उच्च शिक्षा विभाग के आदेश क्रमांक/888/2928/2013/38-3 दिनांक 27/05/2014 को अमान्य करते हुए निर्णय लिया गया कि अस्थायी प्रभार हेतु मान. कुलपति महोदय को अधिकृत किया जावे कि वे अपने विवेकानुसार निर्णय ले। विशेष आमंत्रित सदस्य डॉ. प्रवीण जैन ने यह भी अवगत कराया कि प्रबंध बोर्ड की 44 वीं बैठक दिनांक 24 अप्रेल 2010 के बिन्दु क्रमांक 44(15-2) में आवश्यकता पड़ने पर निदेशक डॉ. प्रवीण जैन तथा तत्कालीन निदेशक डॉ. आभा स्वरूप को कुलसचिव के रूप में डेजिग्नेट करने के लिए कुलपति जी को अधिकृत किया है।

<u>बिन्दु क्रमांक-59 (21) अध्यक्ष की अनुमति से अन्य बिंदु :-</u>

(1) कर्मचारियों द्वारा कार्य में लापरवाही व अनुशासन हीनता बाबत्।

प्रवेश एवं मूल्यांकन के निदेशक डॉ. एन.सी.जैन ने प्रबंध बोर्ड को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय में माईग्रेशन, उपाधि, संशोधित अंकसूची आदि के अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकरण लंबित पड़े हुये है। कतिपय कर्मचारी समय पर कार्यालय नही आते, समय पूर्व कार्यालय छोड़ जाते है अथवा कार्यालयीन अवधि में अपनी सीट छोड़कर इधर उधर घूमते रहते है तथा कुछ कर्मचारियों में बिना अवकाश. आवेदन के कार्यालय से अनुपस्थित रहने की प्रवृत्ति है भी है। इस कारण विश्वविद्यालय के तमाम कार्य लंबित रहते है। कर्मचारी विश्वविद्यालय के अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना भी करते है जिसके कारण जन समस्या निवारण प्रकोष्ट, सूचना का अधिकार तथा मान. मुख्यमंत्री हेल्प लाईन में तमाम प्रकरण दर्ज हो रहे है। अतः कर्मचारियों को विश्वविद्यालयीन सेवा में प्रतिबद्धता पूर्वक, समर्पण भाव से अपना काम करने के लिये सख्त निर्देश जारी किए जावे। इस संबंध में कुलसचिव ने अवगत कराया कि वे निदेशक के कथन से पूर्णतः सहमत है। इस हेतु कर्मचारियों को अनेक बार लिखित/मौखिक चेतावनी दी जा चुकी है। (इस संदर्भ में कुलसचिव कार्यालय से आदेश क्रमांक//मप्रभोमुविवि/कुस//2014/342 दिनांक 10/09/2014 भी प्रसारित किया गया है)

निर्णय :- प्रबंध बोर्ड ने इस प्रकरण को अत्यंत गंभीरता से लेते हुये निर्णय लिया कि कुलसचिव ऐसे कर्मचारियों को चिन्हित कर उनका दायित्व निर्धारण करते हुये परिनियम - 3 की धारा 7 L(1) के अनुसार सख्त अनुशासनहीनता की कार्यवाही करें।

कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)
भोपाल

[illegible] छात्राओं की परीक्ष[illegible]
[illegible] के लिये प्रस्ताव पर विचार।

इग्नों--आईसेक्ट योजना के तहत प्रदेश के संलग्न सूची अनुसार आईसेक्ट के अध्ययन केन्द्रों प संलग्न सूची अनुसार विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया था परंतु इग्नों द्वारा उक्त योजना बंद कर दिये जाव के कारण आईसेक्ट द्वारा इन विद्यार्थियों की परीक्षाओं का आयोजन करने हेतु प्रस्ताव प्राप्त हुआ है जिसमें उल्लेखित है कि इन छात्रों की संपर्क कक्षायें, प्रायोगिक कार्य प्रोजेक्ट कार्य सत्रीय कार्य समस्त शैक्षणिव गतिविधियों को आईसेक्ट द्वारा सम्पन्न करा लिया गया है एवं पाठ्यसामग्री भी प्रदाय की जा चुकी है आईसेक्ट द्वारा प्रस्ताव दिया गया है कि इस विश्वविद्यालय के संचालित पाठ्यक्रमों डी0सी0ए0 पी0जी0डी0सी0ए0 एवं डी0एड0 में इनकी प्रवेश अर्हता का पाठ्यक्रम वार परीक्षण अध्ययन मंडल द्वार कराकर विश्वविद्यालय के निर्धारित सैलेबस, निर्धारित परीक्षा स्कीम एवं परिनियमों के प्रावधानानुसार इनकी परीक्षायें विश्वविद्यालय द्वारा सम्पन्न करा ली जाय इस हेतु डी0सी0ए0 की परीक्षा फीस रू0 1000 प्रतिछात्र, पी0जी0डी0सी0ए0 की परीक्षा फीस रू0 1200 प्रति छात्र एवं डी0एड0 की परीक्षा फीस रू0 1800 प्रति विद्यार्थी प्रतिवर्ष के हिसाब से राशि विश्वविद्यालय को भुगतान करने को तैयार है । विश्वविद्यालय को शैक्षणिक गतिविधियॉ एवं पाठ्यसामग्री प्रदान करने का प्रमाण पत्र आईसेक्ट द्वारा दिया जावेगा । डी0एड0 पाठ्यक्रम की परीक्षा हेतु संतुल्यता/अध्ययन मंडल की अनुशंसानुसार पाठ्यक्रम के निर्धारित सैलेबस की परीक्षण कराया जावेगा एवं डी0एड0 परीक्षा आयोजन के पूर्व संलग्न एन0सी0टी0ई0 द्वारा जारी पत्र के संबंध में शासकीय विभाग से अनापत्ति प्राप्त की जावेगी क्योकि डी0एड0 में प्रवेशित समस्त विद्यार्थी शिक्षक के रूप में विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक है एवं इनको डी0एड0 कराने के लिये प्रस्ताव अनुसार एन0सी0टी0ई0/शासन ने निर्देश दिये है। शासन के राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा वर्ष 2006 से 2008 के मध्य डी0एड0 आपरेशन क्वालिटी के अंतर्गत विश्वविद्यालय स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों को इस विश्वविद्यालय के माध्यम से परीक्षा का आयोजन करा चुका है जिसमें लगभग 1 लाख से अधिक विद्यार्थी लाभांवित हुये थे। यदि मान्य हो तो डी0सी0ए0, पी0जी0डी0सी0ए0 के प्रवेशित छात्रों के परीक्षा आयोजन एवं संबंधित शासकीय विभाग से अनापत्ति/अनुमति प्राप्त होने पर डी0एड0 परीक्षाओं की उक्त छात्रों हेतु परीक्षा आयोजन की अनुमति एवं स्वीकृति हेतु विचारार्थ प्रस्तुत । प्रति विद्यार्थी उपरोक्त के अलावा विश्वविद्यालय का प्रवेश आवेदन पत्र रू0 150 प्रति आवेदन पत्र क्रय करना अनिवार्य किंया जाना प्रस्तावित लें अनुमोदनार्थ।

निर्णय :— नियमानुसार आवेदित संस्था से एम. ओ. यू. करने तथा डी.एड. (D.Ed) की परीक्षाएँ आयोजित करने के लिए शासन से अनापत्ति प्राप्त करने के उपबंध के साथ अनुमोदित।

(3) श्रीमती अर्चना मौर्य के प्रकरण में समिति के प्रतिवेदन पर विचार।

श्रीमती अर्चना मौर्य कम्प्यूटर आपरेटर सामान्य श्रेणी के पद पर मान्य करते हुये विधि अनुसार देय सेवा लाभ देने हेतु उनके आवेदन दिनांक 19.09.2013 परिपेक्ष्य में विश्वविद्यालय के आदेश कमांक 24 दिनांक 5.10.2013 एवं आदेश कमांक 451 दिनांक 07.06.2014 के अनुसार दो सदस्यीय जॉच समिति गठित की गई । समिति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन अनुमोदनार्थ प्रस्तुत।

निर्णय :— प्रस्तावानुसार गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार कर आगामी कार्यवाही हेतु मान. कुलपति जी को अधिकृत किया गया।

(4) रामचरित मानस में विज्ञान से सामजिक उत्थान विषय पर डिलोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ करने पर विचार ।

विश्वविद्यालय के अकादमिक कौसिल की बैठक में रामचरित मानस में विज्ञान से सामजिक उत्थान विषय पर डिलोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की अनुशंसा की गई है जिसका अध्यादेश प्रबंध बोर्ड के समक्ष अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है । अनुमोदन उपरांत अध्यादेश समन्वय समिति के अनुमोदन हेतु प्रेषित किया जावेगा । पाठ्यक्रम का प्रारंभ सत्र 2014-15 में किया जाना प्रस्तावित है। पाठ्यक्रम की विषय वस्तु एवं पाठ्यक्रम लेखको की सूची भी अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है ।

निर्णय :— प्रस्ताव मान्य व अनुमोदित।

म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)
भोपाल

(4)

प्रपत्र - एक

(केवल नीवन अध्यादेश/परिनियम की दशा में भरा जाय)

पाठयक्रम प्रारंभ करने संबंधी अध्यादेश की विश्लेषणात्मक जानकारी

1.	विश्वविद्यालय का नाम	-	मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
2.	अध्यादेश कमांक एवं नाम	-	126 रामचरितमानस में विज्ञान से सामाजिक उत्थान में डिप्लोमा
3.	अनुशंसा प्राधिकारी का नाम एवं तिथि (धारा-52(4) की स्थिति में कुलपति द्वारा अनुशंसा की तिथि)	-	प्रबंध बोर्ड की 59 वीं बैठक दिनांक 22.09.2014
4.	प्रभावशील होने की तिथि	-	समन्वय समिति के अनुमति उपरांत
5.	पाठ्यकम का प्रकार	-	यू0जी0सी0 द्वारा निर्धारित मापदंण्डों के अनुरूप
6.	पाठ्यकम की अवधि	-	एक वर्ष
7.	प्रवेश हेतु निर्धारित छात्र संख्या (अनु0जाति, अनु0जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य आदि के बटवारे सहित)	-	10 क्षेत्रीय केन्द्रों के अधीन 1000 प्रतिवर्ष
8.	प्रवेश की पात्रता नियम	-	12 वीं उत्तीर्ण
9.	प्रवेश की प्रकिया	-	मेरिट के आधार पर
10.	राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय एजेन्सी *यथा* ए0आई0सी0टी0ई0, एन0सी0टी0ई0 आदि) से प्राप्त अनुमति पत्र का कमांक/दिनांक(छायाप्रति संलग्न करें)	-	आवश्यक नही
11.	अध्यापन के विषय एवं पेपर्स	-	संलग्न (अध्यादेशाानुसार) (1) भौतिक विज्ञान सामाजिक और रामचरित मानस (2) रसायन विज्ञान सामाजिकता और रामचरित मानस (3) जीव विज्ञान सामाजिकता और रामचति मानस (4) पर्यावरण सामाजिकता एवं रामचरित मानस
12.	विषय अथवा समीपस्थ विषय के वर्तमान में पदस्थ शिक्षकों की संख्या (पद सहित)	-	दूरस्थ शिक्षा मानदेय के आधार पर मनोनयन

कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)
भोपाल

5

13.	पाठ्यक्रम संचालन हेतु अतिरिक्त आवश्यक शिक्षकों की संख्या एवं औचित्य	-	दूरस्थ शिक्षा मानदेय के आधार पर मनोनयन
14.	परीक्षा आयोजन की प्रक्रिया तथा सैद्धांतिक प्रायोगिक एवं परियोजना कार्य के अंकों का बटवारा आदि	-	संलग्न
15.	शुल्क (सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों अलग-अलग लिखें)	-	वित्त समिति की अनुशंसानुसार प्रबंध बोर्ड द्वारा समय समय पर निर्धारित (इग्नो से अधिक नही)
16.	स्ववित्तीय पाठ्यक्रम की दशा में लागत विश्लेषण (विथिन्न स्त्रोतों से आय एवं विभिन्न मदों पर होने वाले व्यय का विवरण दिया जावे)	-	स्ववित्तीय शासन से कोई अनुदान नही
17.	वित्तीय भार आवर्ती/अनावर्ती विश्वविद्यालय /राज्य शासन	-	विश्वविद्यालय द्वारा स्व स्त्रोतों से
18.	पाठ्यक्रम की उपयोगिता	-	रामचरित मानस की विज्ञान के परिपेक्ष्य सार्थकता एवं विद्यार्थियों को जागरूगता प्रदान करना ।
19.	विषय विशेषज्ञ समिति की निरीक्षण क्रमांक पर संलग्न है/नहीं है । रिपोर्ट (यदि स्थायी समिति द्वारा अनुशंसित है, की प्रति संलग्न है)	-	अध्ययन मंडल अकादमिक काउंसिल एवं योजना बोर्ड की अनुशंसा पर प्रबंध बोर्ड की स्वीकृति
20.	अन्य आवश्यक जानकारी	-	-

कुलसचिव
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
दिनांक 23.09.2014

कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार ...)
भोपाल

प्रपत्र - दो

1.	विश्वविद्यालय का नाम	-	मध्यप्रदेश भोज (मुक्त)विश्वविद्यालय
2.	अध्यादेश कमांक	-	126
3.	अध्यादेश का नाम	-	रामचरितमानस में विज्ञान से सामाजिक उत्थान में डिप्लोमा
4.	अनुशंसा की तिथि	-	प्रबंध बोर्ड की बैठक दिनांक 22.09.2014

अध्यादेश का विद्यमान प्रावधान (5)	अध्यादेश का प्रस्तावित प्रावधान (6)	प्रस्ताव का औचित्य (7)
नया अध्यादेश	नया अध्यादेश	विशिष्ट शिक्षण हेतु

कुलसचिव
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
दिनांक 23.09.2014

कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)
भोपाल

प्रपत्र - तीन

विश्वविद्यालय का नाम	-	मध्यप्रदेश भोज (मुक्त)विश्वविद्यालय
अध्यादेश कमांक	-	126
अध्यादेश का नाम	-	रामचरितमानस में विज्ञान से सामाजिक उत्थान में डिप्लोमा

1.	प्रस्ताव के उन खंडों की जानकारी जिसके कारण आवर्ती वित्तीय भार पडेगा	-	कोई नही
2.	वर्ष	-	प्रस्तावानुसार
3.	कुल आवर्ती/वित्तीय भार	-	-
4.	विश्वविद्यालय पर आवर्ती वितीय भार	-	-
5.	राज्य शासन पर आवर्ती वित्तीय भार	-	-
6.	अन्य अभिकरण पर आवर्ती वित्तीय भार	-	-
7.	स्ववित्तीय पाठ्यकम की स्थिति में (अ) शुल्क प्रति सेमेस्टर/वर्ष (ब) लागत विश्लेषण (विभिन्न स्त्रोतों से आय एवं विभिन्न मदों पर होने वाले व्य का विवरण दिया जावे)	-	-

कुलसचिव
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
दिनांक 23.09.2014

कुलसचिव
म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)
भोपाल

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY

ORDINANCE No. 126

रामचरितमानस में विज्ञान से सामाजिक उत्थान में डिप्लोमा

Objective : This programme is in continuation of the programme to cater to the need of those who wish to enhance and upgrade their knowledge and qualifications. A candidate who has passed 12th of any subject or other equivalent examination of any recognized institutions or University/Board shall be eligible for admission.

Duration : One Year

Fee Structure : Rs. 3000/- Course fee recommended by Board of Study concerned.

Programme Structure : Programme Structure will be decided by the Academic Council on the recommendation of the Board of study concerned.

Programme Delivery : The course design, course contents, counselling, programme structure etc. would be decided by the Academic Council of the University on recommendations of the Board of Studies concerned from time to time and shall be in accordance with the Distance Education Council, UGC or State Govt. norms.

The delivery of the courses will consist of course support material, assignments, contact classes, submission of at least one assignment per course will be necessary conditions for the eligibility of a candidate to appear in Term-End Examination.

Evaluation System : Evaluation System will be decided by Board of Studies and Academic Council of the University however candidates securing overall 60% or more marks will be placed in first division, those securing overall 45% or more but less than 60% marks will be placed in second division and those securing 36% or more but less than 45% in the third division.

Provision for Unsuccessful Candidates : Candidate failing or being unable to appear at the examination due to unavoidable reasons would get one more chance after payment of examination fee as decided by the University in the next session. After the expiry of this period the student would have to seek fresh admission.

कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
राजाभोज मार्ग (कोलार रोड)
भोपाल

रामचरितमानस में जीव विज्ञान से एकात्मभाव विकास एवं सामाजिक उन्नयन

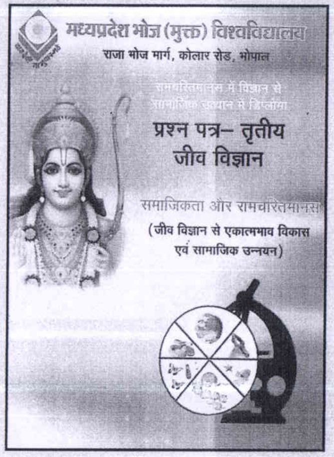

जीव की उत्पत्ति को मानस में अत्यंत सरल ढंग से भौतिक अवस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में होने वाली रसायनिक क्रियाओं का परिणाम बताया है। जब पांचो अवयव जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, एवं आकाश अलग अलग रहते हैं तब जड़ रहते है।

गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी॥

लेकिन यहीं पांचो अवयव जब निश्चित अनुपात में मिलते है तो शरीर का निर्माण करते हैं।

अगुन सगुन दुई ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
अगुणहि सगुणहि नहिं कछु भेदा। बारि बीच जिमि गावहिं बेदा॥
संत सरल चित जगत हित। बिनु विज्ञान कि समता आवई॥

मानस में जीव उत्पत्ति के साथ साथ शारिरिक संरचना, वृद्धि चयापचय, पोषण जीवों का वर्गीकरण इत्यादि का विस्तार से वर्णन किया गया है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मानस में जीव विज्ञान के अध्ययन से एकात्मभाव विकास एवं सामाजिक उन्नयन के प्रयास में मदद मिलेगी।

"आपकी शिक्षा आपके द्वार"

रामचरितमानस में पर्यावरण विज्ञान से पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्थान

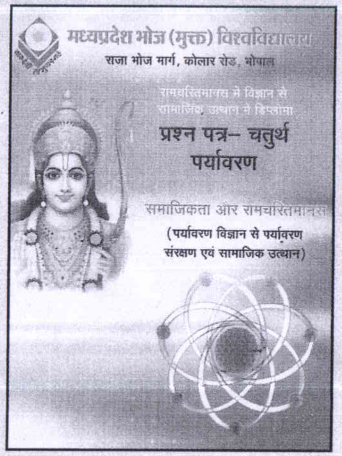

जैविक क्रियाओं के आधार पर पर्यावरण को उन्नत बनाने के लिये मानस में अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत है। जिससे सतत् विकास Sustainable Development एवं सामाजिक समरसता प्राप्त की जा सकती है।

ससि ललाट सुन्दर सिर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा॥

घराती के रूप में पर्यावरण के सभी अजैविक कारकों पर्वतो, नदी, तालाबों की रक्षा एवं उनका आमंत्रण व समन्वय के साथ बारातियों में सभी प्राणीयों को आवाह कर बायोडायर्वसिटी की रक्षा का संकेत देता है और बताता है कि जैविक जगत पूर्णत अजैविक जगत पर निर्भर है एवं उसी का एकाकार रूप है तथा कुष घास, पानी और पार्वती का हाथ देकर हिमालय ने भगवान शंकर से हरित क्रांति का संदेश दिलवाया है। पर्यावरण की रक्षा में लगातार कार्य एवं जल संरक्षण के उपायों के साथ अनियंत्रित प्रदूषण से होने वाली अवर्षा एवं अम्ल वर्षा आदि का वर्णन भी सांकेतिक रूप से दिया गया है।

गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भवहिं समरपीं जानि भवानी ॥
तब जनमेउ षटबदन कुमारा । तारकुं असुरू समर जेहिं मारा ॥

इसके परिणाम स्वरूप पौधे में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से कार्बन डायऑक्साइड (तारक असुर) को शोषित कर विनष्टीकरण करने के साथ-साथ षठबदन कुमार (ग्लूकोज $C_6H_{12}O_6$) का जन्म होता है, एवं पर्यावरण पुष्ट होता है।

मानस में पर्यावरण विज्ञान के अध्ययन से पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्थान की प्रेरणा मिलती है।

वाग्देवी तामुपास्महे

म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

M.P. BHOJ (OPEN) UNIVERSITY BHOPAL (M.P.)

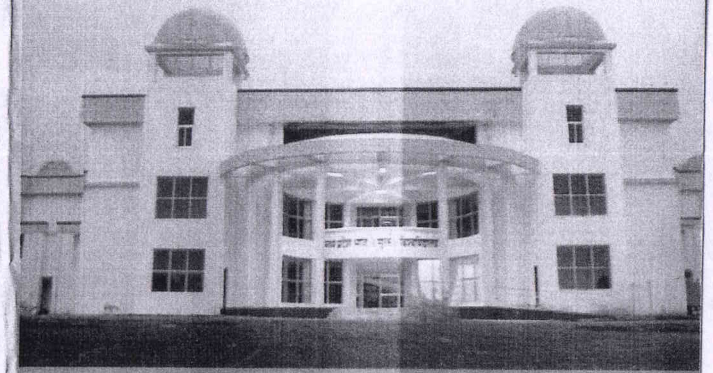

रामचरितमानस में विज्ञान से सामाजिक उत्थान में डिप्लोमा

प्रकाशक : कुलसचिव
म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

विश्वविद्यालय का परिचय

मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, विधानसभा द्वारा पारित "मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम 1991" के तहत स्थापित राज्य विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य शिक्षा को समाज के हर वर्ग, तक पहुँचाना है। शोध के लिए प्रतिबद्ध यह विश्वविद्यालय पिछले तीन दशकों से विभिन्न विषयो में मौलिक सृजन और रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। देश में उच्च शिक्षा के लंगातार महंगे एवं आमजन की पहुँच से दूर होने के इस दौर में म.प्र. भोज मुक्त विश्वविद्यालय की भूमिका निर्विवाद एवं महत्वपूर्ण है।

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के प्रारंभिक वर्षों में ही उच्चतर अकादमिक स्तर की स्थापना की है। प्रदेश के अध्येताओं के सामने एक रचनात्मक विकल्प रखा है, जो लचीलेपन और ज्ञानार्जन की व्यावहारिक विशेषताओ से युक्त है। म.प्र. भोज मुक्त विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापरख शिक्षा प्रदान करने का 29 वर्षों का एक लंबा सफर तय किया है, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की प्रासंगिकता बनाये रखने के लिए यह विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में बदलाव और सुधार के लिए निरंतर काम कर रहा है, तथा समाज और देश के हित में अपनी शिक्षा का सदुपयोग करने की प्रेरणा देता रहा है।

वर्तमान में यह विश्वविद्यालय अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर जीवंत छात्र सहायता प्रणाली प्रदान करने के लिए डेटा सेंटर के विकास के साथ ही वर्चुअल क्लास रूम, रिकॉर्डिंग स्टूडियो, इंटरनेट रेडियो, मोबाईल एप्लीकेशन और टोल-फ्री नंबर के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। यह विश्वविद्यालय युवा पीढ़ी को गुणवत्तापरक, नवाचार युक्त, कौशलयुक्त शिक्षा प्रदान करने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए कुशल मानव संसाधन तैयार करने में सफल रहा है। इसी राह पर चलते हुये विश्वविद्यालय अपने ध्येय "आपकी शिक्षा आपके द्वार" को चरितार्थ करने के साथ ही देश को वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए समर्पित है।

विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित है। साथ ही बी.एड. (विशेष शिक्षा) बी.एड. (सामान्य), डी.एल. एड. एवं अनेक सर्टिफिकेट कोर्सेस भी संचालित है। इसी क्रम में वर्ष 2020 से "रामचरितमानस में विज्ञान से सामाजिक उत्थान में डिप्लोमा पाठ्यक्रम" प्रारंभ किया गया है जो समाज को नई दिशा प्रदान करता हैं।

रामचरितमानस में भौतिक विज्ञान से सामाजिक समरसता एवं विकास

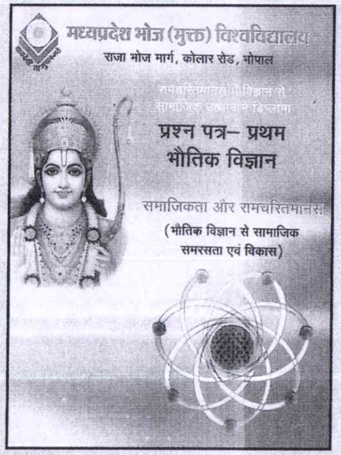

मानव जीवन एवं शरीर में पानी का असीमित महत्व है मानव शरीर के भार का कुल 70 प्रतिशत भाग पानी है इसीलिए मानसकार ने पदार्थ की भौतिक अवस्थाओं और उनमें ऊर्जा की गति को समझने के लिए पानी को चुना है और पानी की तीन अवस्थाओं गैस, द्रव व ठोस की वाष्प, जल एवं बर्फ तीन रूपों में व्याख्या की हैं जिससे यह स्पष्ट हो सके कि निराकार एवं साकार में कोई अन्तर नहीं है। और पदार्थ तीनों अवस्थाओं में रहता है/रह सकता है। तथा जड़-चेतन, अदृष्य, दृष्य, आकार-निराकार सभी उसी एक पदार्थ के अनेक रूप है।

सोई जल अनल अनिल संघाता। होई जलज जग जीवन दाता॥
जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे॥ बाल काण्ड दोहा 115 चौपाई

पदार्थ की विभिन्न अवस्थाएं मिलकर जीव द्रव्य का निर्माण करती हैं जिससे जैविक क्रियायें प्रारम्भ हो जाती है अर्थात जीव की उत्पत्ति हो जाती है। मानस में भौतिक विज्ञान के अध्ययन से समाज की जीवन्तता एवं समरसता के सूत्र पूर्णतः समझे जा सकते हैं।

"आपकी शिक्षा आपके द्वार"

रामचरितमानस मे रसायन विज्ञान से वैश्विक बंधुत्व एवं सामाजिक प्रगति

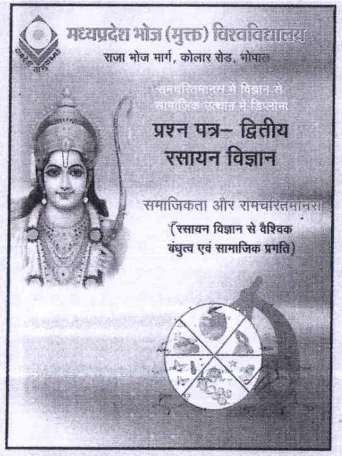

रसायन - रस+आयन दो शब्दों "विलायक एवं विलेय" से बना रस विलयन अभिक्रियाओं का परिणाम है। जो जीवन-लक्षणों से बने संसार निर्माण का आधार है। अभिक्रियाओं के आपस में संयोजन, पुनः विघटन व संयोजन का परिणाम है जिसे मानस में अत्यंत सारगर्भित एवं सरल ढंग से बताया है। लिखा है कि "बिनु जल रस कि होई संसारा" अर्थात जल (विलायक) के बिना घोल नहीं बनता जैसे अजैविक एवं जैविक तत्वों के मिलन के बिना संसार नहीं बनता। संसार भी विभिन्न रसों का यौगिक मिश्रण है। अर्थात् जल ही जीवन में एक मात्र विलायक है और पानी अजैविक अवयवों को अपने सहयोग एवं संयोग जैविक मूल में परिवर्तित कर देता है तथा इन्हीं के संयोजन से जैविक संसार का निर्माण संभव हो पाता है और विविधता भरे संसार का मूल मंत्र भी मानस में स्पष्ट दिया है कि एक ही घटक विभिन्न परिस्थितियों में समान घटकों से रसायनिक क्रिया कर भिन्न परिणामी पदार्थ बनाते है। तथा अन्य पदार्थ या घटक भी अभिक्रियाओं के प्रकार व अभिक्रिया की गति को बदलते है।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजू मति सोई॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पाई कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग॥

मानस में रसायन विज्ञान के अध्ययन से विश्वबंधुत्व एवं सामाजिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।